गणपति

सिद्धि का दिव्य विज्ञान

विघ्नों से विजय तक की यात्रा

हर व्यक्ति जीवन में सफलता चाहता है, परंतु सफलता का सबसे बड़ा शत्रु विघ्न नहीं, बल्कि बिखरा हुआ मन, गलत निर्णय और सीमित दृष्टि है। इसलिए सनातन परंपरा ने प्रत्येक शुभ कार्य के आरंभ में श्रीगणपति का स्मरण अनिवार्य माना।

गणपति बुद्धि, विवेक, मौलिक चिंतन, एकाग्रता और पूर्णता के अधिष्ठाता हैं। गणपति समस्याओं से भागना नहीं, बल्कि उन्हें प्रयासों से अवसर में बदलना सिखाते है। जब गणपति हमारे विचारों, निर्णयों और कर्मों में उतरने लगते है, तभी जीवन वास्तव में निर्विघ्न होकर सिद्धि और समृद्धि की ओर अग्रसर होता है।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

गणपति आरम्भ के देवता हैं। किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले गणपति की पूजा-अर्चना की जाती है और इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि शिव और पार्वती के विवाह के पूर्व गणपति की वंदना की गई थी और इसके बाद ही विवाह संस्कार संपन्न हुआ था।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि गणपति शिव और पार्वती की संतान हैं, परंतु गणपति आदि देव हैं और कोई भी शुभ कार्य उनके स्मरण के बिना आरंभ नहीं होता है, क्योंकि गणपति में यह शक्ति है कि वे कार्य को निर्विघ्न कर दें।

प्राचीन समय में तो संग्राम लड़े जाते थे, परंतु आज के समय में तो संग्राम होते नहीं हैं, पर अब जीवन अपने आप में एक संग्राम है। ऐसे में गणपति का पूजन बहुत आवश्यक है। गणपति हमारे जीवन से विघ्न हर देते हैं, फिर जो हमें चाहिए वह हमें मिल जाता है।

एक आम मनुष्य, एक आम साधक की इच्छाएं भी क्या हैं? वह चाहता है कि उसका घर बन जाए, उसकी संतान अच्छे से पढ़-लिख ले, उसके परिवार में सुख रहे, उसके घर में स्वास्थ्य और आमदनी बनी रहे।

इन सभी इच्छाओं की पूर्ति में विघ्नेश्वर की कृपा अनिवार्य है, बिना उनके सहयोग के न तो साधना मिलेगी, न सिद्धि। ऋद्धि का तो प्रश्न ही नहीं आता है। **ऋद्धि का अर्थ है धन एवं सिद्धि का अर्थ है सफलता।**

जैसे दूध को दही में जमाना होता है, तो उसमें खट्टा डालकर उसे शांति से छोड़ दिया जाता है, जिससे वह जम सके। अब यदि हर आधे घंटे में कोई आकर उसमें कलछी चला देगा, तो क्या दही जम पाएगा?

यदि तुम मंत्र जप कर रहे हो, तब तुम चाहते हो कि तुम्हें एकांत और शांति मिले, जिससे तुम्हारा जप निर्विघ्न पूर्ण हो सके। हर दस मिनट में यदि तुम उठकर इधर-उधर देखने लगोगे, तो क्या तुम्हारा जप संपूर्ण होगा?

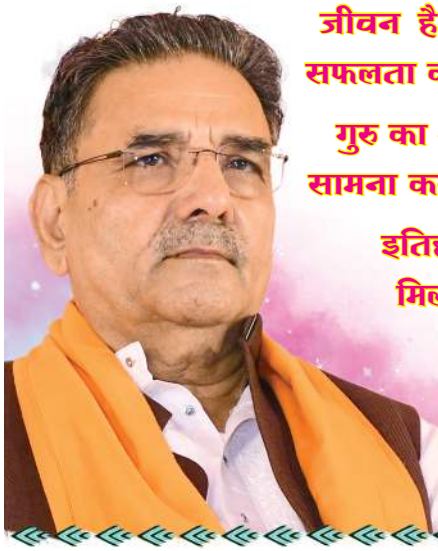

जीवन है तो समस्याएं भी आएंगी और संघर्ष करने का साहस ही सफलता की पहचान है....

गुरु का आशीर्वाद भी उन्हीं पर बरसता है, जिसके भीतर चुनौतियों का सामना करने का संकल्प, धैर्य और पुरुषार्थ होता है।

इतिहास गवाह है कि सम्मान, सिद्धि और सफलता केवल उन्हीं को मिली है जिन्होंने संघर्ष को अपना साथी बनाया। इसलिए कठिनाइयों से भयभीत नहीं, बल्कि उन्हें अवसर मानकर आगे बढ़ें।

जहां गुरु का मार्गदर्शन और साधक का पुरुषार्थ मिलते हैं, वहां असंभव भी संभव बन जाता है।

– सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली।

विद्यारंभ में भी निर्विघ्नता अनिवार्य है। नहीं तो अनेक लोग ऐसे हैं जो पढ़ाई तो बड़े उत्साह से आरंभ करते हैं, पर बीच में उनका अध्ययन किसी न किसी कारण से छूट जाता है। यह कारण धनाभाव हो सकता है या फिर मन का बदल जाना हो सकता है।

जब तुम किसी प्रयोजन को पूरा करने की सोचते हो तो तुम चाहते हो कि उसमें कोई बाधा नहीं आए। इसके लिए तुम्हें दो तत्व आवश्यक हैं – मनोबल और गणपति का आशीष।

दोनों ही गणपति हैं। मनोबल को विग्रह रूप में देखा जाए तो वह गणपति हैं, क्योंकि मनोबल बुद्धि से ही मिलता है।

आदि कवि वाल्मीकि श्रीगणेश स्तोत्र में कहते हैं, 'मैं उन कवियों के स्वामी, बुद्धि के अधिपति श्रीगणेश को प्रणाम करता हूं, जिनके दांतों का युगल समस्त विद्याओं और कलाओं का दान करने वाला है। वे देवताओं के गुरु बृहस्पति को भी विद्या प्रदान करने वाले हैं, तथा साधकों की इच्छित विद्याओं को प्रदान करते हैं।'

गणपति में प्रत्युत्पन्नमति का भंडार है। वे समस्याओं से घबराते नहीं हैं बल्कि उसके नए तरह के उपाय ढूंढ़ लेते हैं। एक बार एक प्रतियोगिता हुई कि प्रथम पूज्य देव कौन होंगे? इसमें था कि जो पृथ्वी की परिक्रमा सबसे शीघ्रता से कर लेगा वही बनेगा प्रथम पूज्य।

गणपति ने अपनी सवारी की शक्ति को आंका और कार्य की गंभीरता को देखते हुए, नया तरीका सोचा, पृथ्वी की परिक्रमा करने का। उन्हें पता था कि मूषक के भरोसे परिक्रमा करेंगे तो वह कभी पूर्ण नहीं होगा। उन्होंने माता-पिता की परिक्रमा की और कहा कि मेरे पृथ्वी और आकाश दोनों मेरे माता-पिता हैं। इस बात में कोई विवाद नहीं है कि माता-पिता धरती और आकाश होते हैं।

बस, बन गए गणपति प्रथम पूज्य, क्योंकि गणपति लकीर के फकीर नहीं हैं। यही गुण गणपति को दूसरे देवताओं से भिन्न कर देता है।

पृथ्वी की परिक्रमा की उस कथा का सार केवल इतना नहीं है कि गणपति ने माता-पिता को ब्रह्माण्ड माना, बल्कि उसका एक और गहरा संदेश है। गणपति ने यह दिखाया कि हर समस्या का समाधान केवल वेग से नहीं, दृष्टि से निकलता है। जो व्यक्ति केवल दूसरों के पीछे-पीछे चलता है, वह प्रतियोगिता तो कर सकता है, परंतु इतिहास नहीं रच सकता। **इतिहास वही रचते हैं, जो समस्या को नए कोण से देखने की क्षमता रखते हैं।**

गणपति के विशाल मस्तक का अर्थ ही है व्यापक चिंतन। वे हमें सिखाते हैं कि यदि जीवन में सफलता चाहिए तो केवल परिश्रम पर्याप्त नहीं है, **सही दिशा में परिश्रम और परिस्थितियों को नए दृष्टिकोण से देखने की क्षमता भी आवश्यक है।**

इसलिए गणपति बुद्धि के देवता हैं। बुद्धि का अर्थ केवल ज्ञान नहीं है। ज्ञान तो रावण के पास भी था, परंतु बुद्धि वह है जो सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करे। बुद्धि वह है जो एक ही परिस्थिति में दूसरों को संकट दिखाए और तुम्हें अवसर दिखा दे। यही प्रत्युत्पन्नमति है।

ध्यान से देखो, गणपति के शरीर का प्रत्येक अंग हमें यही शिक्षा देता है।

उनका बड़ा सिर कहता है - बड़ा सोचो।

उनके विशाल कान कहते हैं - अधिक सुनो और कम बोलो।

उनकी छोटी आंखें बताती हैं कि लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखो।

उनकी सूंड हमें सिखाती है कि परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालना सीखो। और उनका छोटा मुख यह कहता है कि जितना आवश्यक हो, उतना ही बोलो।

आज संसार में सबसे बड़ा विघ्न बाहर नहीं है, भीतर है। हमारा मन ही हर समय कलछी चलाने का काम कर रहा है। एक लक्ष्य तय करते हैं, फिर दूसरा लक्ष्य सामने आ जाता है। एक पुस्तक पढ़ते हैं, तभी मोबाइल का संदेश आ जाता है। एक साधना प्रारंभ करते हैं, तभी मन किसी और विषय की ओर भागने लगता है। बाहर की बाधाओं से पहले मन की चंचलता सबसे बड़ी बाधा है।

गणपति का स्मरण इसलिए आवश्यक है क्योंकि वे मन को एकाग्रता प्रदान करते हैं। एकाग्रता ही शक्ति है। सूर्य का प्रकाश जब बिखरा हुआ रहता है तो केवल प्रकाश देता है, परंतु वही प्रकाश यदि उत्तल लेंस से एक बिंदु पर केंद्रित कर दिया जाए तो अग्नि उत्पन्न कर देता है। मनुष्य का मन भी ऐसा ही है। बिखरा हुआ मन केवल इच्छाएं उत्पन्न करता है, परंतु केंद्रित मन उपलब्धियां उत्पन्न करता है।

आज संसार में ज्ञान की कमी नहीं है, जानकारी की भी कमी नहीं है, परंतु ध्यान की कमी है। लोग बहुत कुछ जानते हैं, परंतु किसी एक कार्य पर टिक नहीं पाते। इसी कारण बहुत से लोग आरंभ तो बहुत करते हैं, परंतु पूर्ण बहुत कम करते हैं।

गणपति आरंभ के देवता ही नहीं हैं, वे पूर्णता के भी देवता हैं, क्योंकि विघ्नों को हटाने का अर्थ केवल बाहरी समस्याओं को दूर करना नहीं है, बल्कि मन के बिखराव को समाप्त करना भी है।

इसलिए गणपति की उपासना का वास्तविक अर्थ केवल मोदक चढ़ाना नहीं है, बल्कि उनके गुणों को अपने भीतर उतारना है। जब तुम परिस्थितियों से घबराने के स्थान पर नए उपाय खोजने लगते हो, जब तुम भीड़ का अनुसरण करने के स्थान पर स्वयं विचार करने लगते हो, जब तुम अपने मन को एक लक्ष्य पर स्थिर करना सीख लेते हो, तब समझना कि गणपति का आशीर्वाद प्राप्त होने लगा है।

वक्रतुण्ड का अर्थ ही है सीधी रेखा पर चलने की जिद छोड़कर आवश्यकता पड़ने पर वक्र मार्ग से भी समाधान ढूंढ़ लेना। संसार में बहुत बार सफलता उन्हीं को मिलती है जो अलग सोचने का साहस रखते हैं।

गणपति हमें यही सिखाते हैं कि **बुद्धि केवल पुस्तकों से नहीं आती, बल्कि दृष्टि से आती है और जिस मनुष्य के पास दृष्टि, धैर्य और एकाग्रता तीनों आ जाएं, उसके लिए विघ्न स्वयं मार्ग छोड़ देते हैं।**

भगवान गणपति केवल पूजन के नहीं, बल्कि धारण करने के देवता हैं...

विशाल बुद्धि, सूक्ष्म विवेक, अटूट धैर्य, प्रखर तर्कशक्ति, कर्मनिष्ठा और विनम्रता यही तो जीवन की वास्तविक संपदा है...

इन गुणों को अपने व्यक्तित्व में उतार लें, तो जीवन स्वतः ही आनन्द का भण्डार बन जाता है..

गणपति की कृपा से विघ्न स्वतः ही दूर हो जाते है और सफलता के द्वार खुल जाते हैं।

गणपति का वास्तविक आशीर्वाद तभी मिलता है, जब सद्गुरु ज्ञान से आत्मसात् होकर साधक विचारों, कर्मों और चरित्र में गणपति को धारण करता है...

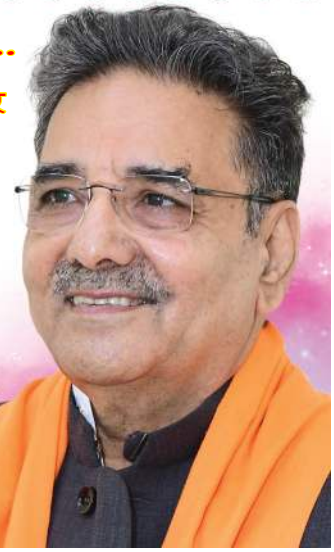

इसलिए गणपति केवल विघ्नहर्ता नहीं हैं, वे फोकस, मौलिक चिंतन और सिद्धि के भी अधिष्ठाता हैं। जो गणपति की तरह सोचना सीख गया, उसके लिए संसार का प्रत्येक संकट एक नई संभावना बन जाता है।

यही कारण है कि गणपति को केवल विघ्नहर्ता कहकर सीमित कर देना उनके विराट स्वरूप के साथ न्याय नहीं होगा।

सामान्यतः यह प्रश्न उठता है कि क्या गणपति वेदों में वर्णित हैं?

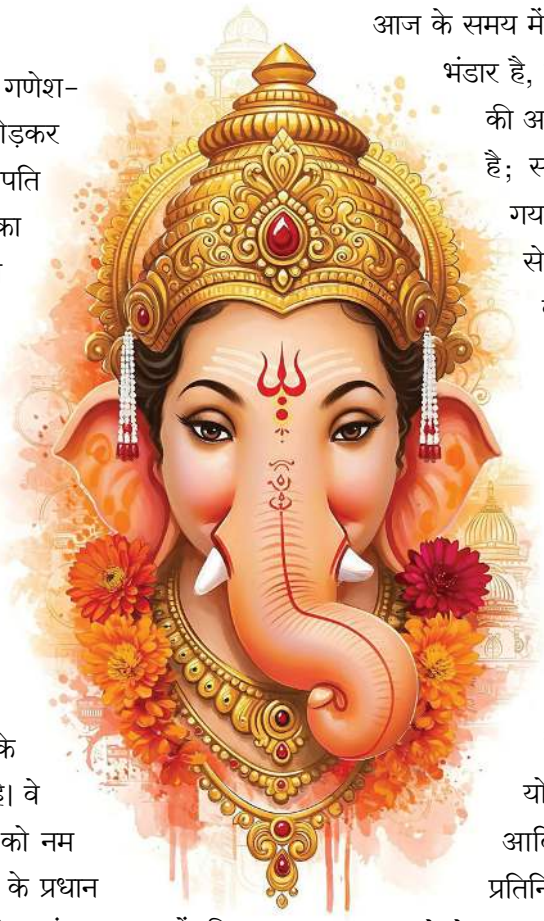

क्योंकि आज अधिकांश लोग गणेश-पूजा को पौराणिक परंपरा से जोड़कर देखते हैं। परंतु सत्य यह है कि गणपति का स्वरूप वैदिक है। वेदों में उनका नाम गणेश या गणपति के रूप में नहीं, अपितु ब्रह्मणस्पति के रूप में प्राप्त होता है। ब्रह्मण का अर्थ है वाणी, मंत्र अथवा वाक् और उसके स्वामी हैं ब्रह्मणस्पति। वाणी का स्वामी वही हो सकता है, जिसके अधीन बुद्धि हो, वाणी बुद्धि की ही अभिव्यक्ति है।

इसीलिए आदि कवि वाल्मीकि ने गणपति को बुद्धिनाथ, कवियों के स्वामी और समस्त विद्याओं के अधिष्ठाता के रूप में प्रणाम किया है। वे कहते हैं कि मैं उन स्वामी गणेश को नम स्कार करता हूं, जो समस्त विघ्नों के प्रधान नाशक हैं, जिन्होंने अपनी इच्छा से असंख्य ब्रह्माण्डों की रचना की और जो दक्षिणामूर्ति शिव के समान ज्ञान एवं विद्या प्रदान करने वाले हैं।

गणपति का संबंध केवल ऋद्धि और सिद्धि से नहीं है, बल्कि दृष्टि और बुद्धि से भी है। धन और सफलता तो उनके अनुग्रह के फल हैं, परंतु उनका वास्तविक वरदान है विवेक। धन के बिना मनुष्य कुछ समय तक रह सकता है, परंतु विवेक के बिना नहीं। संसार में जितनी भी बड़ी भूलें हुई हैं, वे बुद्धि के अभाव से नहीं, विवेक के अभाव से हुई हैं। ज्ञान होना और उसका उचित प्रयोग करना, इन दोनों के बीच का जो सेतु है, वही गणपति हैं।

गणपति की उपासना केवल विघ्न दूर करने के लिए नहीं की जाती। यदि केवल विघ्नों को दूर करना ही उद्देश्य होता, तो ऋषि, मुनि, देवता और स्वयं वाल्मीकि उनकी स्तुति क्यों करते? गणपति का तत्त्व मनुष्य को केवल सुविधा नहीं देता, वह दृष्टि देता है। वह केवल सफलता नहीं देता, वह सफलता को संभालने की बुद्धि भी देता है। वह केवल ज्ञान नहीं देता, वह ज्ञान को जीवन में उतारने का विवेक भी देता है।

आज के समय में जब मनुष्य के पास सूचनाओं का भंडार है, परंतु एकाग्रता का अभाव है; ज्ञान की अधिकता है, परंतु स्पष्टता का अभाव है; साधन बहुत हैं, परंतु साध्य खो गया है, तब गणपति का स्मरण पहले से अधिक प्रासंगिक हो जाता है। क्योंकि गणपति का तत्त्व हमें यह सिखाता है कि जीवन में केवल अधिक जानना ही पर्याप्त नहीं है, सही देखना भी आवश्यक है। और जब दृष्टि शुद्ध होती है, तब विचारों में मौलिकता आती है, मन में स्थिरता आती है और कार्यों में सिद्धि आती है।

गणपति केवल विघ्नहर्ता नहीं हैं, वे समस्त विद्याओं, वेदों, योग, आगम और काव्य शक्ति के आदिगुरु हैं। वे परब्रह्म के साक्षात् प्रतिनिधि हैं। अतः जो साधक गणपति को केवल मनोकामनाओं की पूर्ति तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उनके स्वरूप में निहित बुद्धि, विवेक, संतुलन, त्याग, करुणा और मौलिक चिंतन को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है, वही वास्तव में गणपति की उपासना करता है। रूप के माध्यम से निराकार तक पहुंचने का नाम ही सिद्धिदायक गणपति साधना है और जब मनुष्य के भीतर यह बुद्धि जागृत हो जाती है, तब विघ्न समाप्त नहीं होते, बल्कि वह स्वयं इतना समर्थ हो जाता है कि विघ्न उसके मार्ग को रोकने के स्थान पर उसकी उन्नति का साधन बन जाते हैं। सिद्धियां उसके सम्मुख करबद्ध होकर खड़ी हो जाती हैं।